

# काव्यसाहित्यस्य इतिहासः

\* अश्वघोषः \*

रामायणोत्तरस्य ध्रुपदीयुगसूचनापूर्वे संस्कृतसाहित्ये विश्ववरेण्यः, शास्त्रनिपुणः, बौद्धदार्शनिकः प्रसिद्धः नाट्यकारश्च आसीत् महाकविः अश्वघोषः। धर्मीये ऐतिह्ये साहित्यावदाने च अश्वघोषस्य माहात्म्यं सर्वे जानन्ति एव। तस्य जीवनेतिहासविषये पर्याप्ति तथ्यं न उपलभ्यते। परन्तु लोकमुखात् काव्यादिभ्यः च अनुमीयते यत् अश्वघोषः आदौ ब्राह्मणः आसीत्। ततः परं महायानबौद्धसम्प्रदायं प्रति आसक्तिकारणवशात् बौद्धधर्मं स्वीकृतवान्। ख्रीष्टीयप्रथमशतकस्य कुषाणराजस्य कणिष्कस्य समकालीनः अश्वघोषः आसीत्। अतः कणिष्कस्य स्थितिकाले एव अश्वघोषस्य प्रतिभा विकशिता अभवत्। सः आदौ बौद्धभिक्षुकरूपेण जीवनं यापयित्वा मध्यभारते बौद्धधर्मं प्रचारितवान्। ततः परं कणिष्कस्य सभायाम् उत्तमस्थानं प्राप्तवान्। अश्वघोषस्य माता आसीत् सुवर्णाक्षी। अयोध्यायाः साकेतनगरे अश्वघोषः निवसति स्म। रामायणे महाभारते जैनबौद्धदर्शने च अश्वघोषस्य महत् पाण्डित्यम् आसीत्। तस्मात् महाकविः, भदन्तः, महावादी इत्येताभिः अभिधाभिः भूष्यते स्म।

अश्वघोषस्य महाकाव्येषु यानि अङ्गानि व्यवहृतानि सन्ति, तानि तस्मादपि पूर्वस्मात् रामायणात् बौद्धसाहित्यिकाङ्गिकेभ्यः विलक्षणानि इति वक्तुं शक्यते। यथा दण्डी तथा आलंकारिकगणः महाकाव्यस्य यां संज्ञां निरूपितवान् सा संज्ञा अश्वघोषस्य महाकाव्येषु न परिलक्ष्यते। बुद्धस्य जीवनवर्णने, समसामयिकस्य राजतन्त्रस्य परिचये, धर्मतत्त्वस्य उपस्थापनकौशले किञ्च प्राचीने भारतीयसाहित्ये च तस्य श्रेष्ठकवित्वं परिलक्ष्यते।

\* अश्वघोषः \*

रामायणोत्तरस्य ध्रुपदीयुगसूचनापूर्वे संस्कृत साहित्ये विश्ववरेण्यः शास्त्रनिपुणः बौद्ध दार्शनिकः ओ प्रसिद्धः नाट्यकारः छिलेन महाकविः अश्वघोषः। धर्मीय ऐतिह्ये ओ साहित्येऱ अवदाने अश्वघोषेऱ माहात्म्यं सकलेऱ अवश्यं जानां आछे। अश्वघोषेऱ जीवन इतिहासः सम्पर्केऱ खूबऱ बेशिऱ तथ्यं पाओयाऱ यायऱ नां। किञ्च लोकमुखं ओ तौऱ रचितऱ काव्येऱ थेकेऱ अनुमानऱ कराऱ यायऱ- प्रथमेऱ तिनिऱ ब्राह्मणऱ छिलेन। तारपरेऱ महायानऱ बौद्धऱ सम्प्रदायेऱ प्रतिऱ आसक्तऱ हयेऱ बौद्धधर्मं ग्रहणऱ करेन। ख्रीष्टीयऱ प्रथमऱ शतकेऱ कुषाणराजऱ कनिष्केऱ समसामयिकऱ रूपेऱ अश्वघोषेऱ नामेऱ उल्लेखऱ पाओयाऱ यायऱ। सुतरां बलाऱ यायऱ कनिष्केऱ छितिऱ कालेऱ अश्वघोषेऱ प्रतिभाऱ विकशितऱ हयेऱछिल। तिनिऱ प्रथमदिकेऱ बौद्धभिक्षुकरूपेऱ जीवनऱ यापनऱ करेऱ मध्यभारतेऱ बौद्धधर्मं प्रचारऱ करेन। तारपरेऱ कनिष्केऱ सभातेऱ उत्तमऱ स्थानं लाभऱ करेन। अश्वघोषेऱ माताऱ छिलेन सुवर्णाक्षी। कविऱ बासस्थानं छिल अयोध्याऱ साकेतऱ नगरे। रामायणं, महाभारतं, जैनं ओ बौद्धऱ दर्शनेऱ कविऱ अगाधऱ पाण्डित्येऱ निदर्शनं स्पष्टं लक्ष्यऱ कराऱ यायऱ। सेइऱ कारणेऱ तिनिऱ आचार्यऱ, महाकविऱ, भदन्तऱ, महावादीऱ नानाऱ अभिधायऱ भूषितऱ हन।



পূর্ববর্তী রামায়ণ অথবা সমসাময়িক বৌদ্ধ সাহিত্যের আঙ্গিক থেকে যে বিলক্ষণ তা বলা যেতে পারে। কারণ দণ্ডী ও আলংকারিকগণ মহাকাব্যের যে সংজ্ঞা নিরূপণ করেছেন অশ্বঘোষের মহাকাব্যে সেই সমস্ত লক্ষণের নিদর্শন পাওয়া যায় না। বুদ্ধের জীবনী বর্ণনা, সমসাময়িক রাজতন্ত্রের পরিচয়, ধর্মতত্ত্বের উপস্থাপনার কৌশল ও প্রাচীন ভারতীয় সাহিত্য রচনার দ্বারা অশ্বঘোষ অন্যতম শ্রেষ্ঠ কবিরূপে পরিচিত হন।

### ✿ রচনাবলী

অশ্বঘোষস্য নাম্না বহব: গ্রন্থা: প্রচলিতা: সন্তি। পণ্ডিতা: তস্য গ্রন্থবিষয়ে बहुविधान् विवादान् कृतवन्तः। तेन रचितेषु ग्रन्थसमूहेषु बुद्धचरितम्, सौन्दरानन्दाख्यं महाकाव्यं शारिपुत्राख्यं नाटकं निःसन्देहेन तस्य साहित्यकृते: निदर्शनम्। एतद्विहाय महायानश्रद्धोत्पादशास्त्रम्, ब्रजसूची, सूत्रालङ्कारः, गण्डीस्तोत्रगाथा, त्रिदण्डमाला चेत्यादिग्रन्थाः अश्वघोषेण प्रणीताः सन्ति इति एवं कथा प्रचलिता वर्तते। किन्तु एतेषां समेषां ग्रन्थानां प्रणेता अश्वघोषः न वेति विषये पण्डितानां मतभेदः अस्ति।

### ✿ রচনাবলী

অশ্বঘোষের নামে বহু গ্রন্থ প্রচলিত আছে। পণ্ডিতেরা তার গ্রন্থ বিষয়ে বহু বিবাদ ও করেছেন। তার প্রচলিত গ্রন্থ সমূহের মধ্যে বুদ্ধচরিত, সৌন্দরানন্দ নামক মহাকাব্য এবং সারিপুত্র নামক নাটকটি নিঃসন্দেহে তার সাহিত্য কৃতির নিদর্শন রেখে গেছে। এছাড়া মহাযান-শ্রদ্ধোৎপাদশাস্ত্র, ব্রজসূচী, সূত্রালঙ্কার, গণ্ডীস্তোত্রগাথা ও ত্রিদণ্ডমালা নামক রচনাগুলি তার নামেও প্রচলিত। কিন্তু সমস্ত গ্রন্থের যথার্থ রচয়িতা অশ্বঘোষ কিনা সে বিষয়ে পণ্ডিতদের মধ্যে যথেষ্ট সন্দেহ রয়েছে।

### ★ बुद्धचरितम् -

शान्तरसप्रधानबुद्धस्य जीवन्यवलम्बनेन अश्वघोषेण विरचितस्य सर्वश्रेष्ठसाहित्यकृते: निदर्शनं तावत् बुद्धचरिताख्यं महाकाव्यम्। अस्य महाकाव्यस्य सर्गसंख्याविषये पण्डितानां मध्ये विवादः परिलक्ष्यते। चैनिकपरिव्राजकस्य “इत्-सिम्” इत्यस्य मते तु अष्टविंशतिसर्गात्मकं महाकाव्यम् इदम्। तिब्बतीयभाषायाम् एते अष्टाविंशतिसर्गाः यद्यपि लभ्यन्ते तथापि दुर्भाग्यवशात् भारते केवलं सप्तदश सर्गाः एव उपलभ्यन्ते। अनुमीयते यत् तन्मध्ये त्रयोदशसर्गाः प्रधानाः वर्तन्ते। अन्ये चत्वारः सर्गाः अमृतानन्दाख्यस्य कस्यचिद् कवेः कृतयः भवन्ति।

बुद्धचरितं तु बुद्धस्य जीवनमाधारीकृत्य कृत्यं महाकाव्यम्। सिद्धार्थस्य जन्मतः निर्वाणलाभपर्यन्तं बुद्धस्य घटनाबहुलं किञ्च महत्त्वमण्डितजीवनवृत्तान्तः अस्मिन् महाकाव्ये वर्णयते। हिमालयस्य पाददेशे कपिलावस्तुनः शाक्यवंशस्य राज्ञः शुद्धोधनस्य किञ्च राज्ञ्याः मायादेव्याः पुत्ररूपेण सिद्धार्थस्य जन्म अभवत्। जन्मतः आरभ्य तस्य वयःप्राप्तिः, परमासुन्दरीकन्यया यशोधरया सह विवाहः, संसारं प्रत्यनासक्तिः, पुत्रस्य अनासक्तिदूरीकरणाय राज्ञः शुद्धोधनस्य उद्यानविहारस्य प्रमोदभ्रमणस्य च व्यवस्था, राजपथे परिभ्रमणकाले जराव्याधिग्रस्तमृतदेहम् अवलोक्य राजपुत्रस्य मनसि कुतूहलबोधः, सौम्यमूर्तिसम्पन्नं संसारत्यागिनं सन्न्यासिनं दृष्ट्वा वैराग्योत्पत्तिः, मध्ये रात्रौ तरुणीनाम्



अवस्थामवलोक्य वितृष्णावशात् सिद्धार्थस्य गृहत्यागः, राजपुर्या शोकच्छाया, यशोधरायाः विलापः, सत्यान्वेषणाय सिद्धार्थस्य देशभ्रमणं, अन्तिमे साधनया सिद्धार्थस्य निर्वाणलाभः बुद्धत्वलाभश्च इत्येते विषयाः अस्मिन् ग्रन्थे वर्णिताः, येन अस्य समृद्धं सज्जातम्।

★ बुद्धचरित-

शास्त्ररस प्रधान बुद्धेः जीवनी अवलम्बने अशुचोयेर सर्वश्रेष्ठ साहित्यकृतिर निदर्शन पाওয়া যায় बुद्धचरিত নামক মহাকাব্য গ্রন্থ থেকে। গ্রন্থটির সর্গ সংখ্যা সম্পর্কে পণ্ডিতদের মধ্যে নানা মতভেদ দেখা যায়। চৈনিক পরিব্রাজক "ইত সিং" এর মতে বুদ্ধচরিত ২৮টি সর্গে রচিত একপ্রকার সাহিত্যিক মহাকাব্য। এই মহাকাব্যে তিব্বতি ভাষায় ২৮টি সর্গের অনুবাদ পাওয়া গেলেও দুর্ভাগ্যবশত ভারতে উপলভ্যমান সর্গের সংখ্যা মাত্র ১৭টি। তার মধ্যে অনেকে অনুমান করেন প্রথম ১৩টি সর্গ মূল রচনা, এবং শেষের ৪টি সর্গ অমৃতানন্দ নামক কোনো এক কবির রচনা।

বুদ্ধচরিত মূলত বুদ্ধের জীবনী অবলম্বনে রচিত গ্রন্থ। সিদ্ধার্থের জন্ম থেকে নির্বাণ লাভ পর্যন্ত বুদ্ধের ঘটনা বহুল এবং মহত্বমণ্ডিত জীবনবৃত্তান্ত এই গ্রন্থে বর্ণিত হয়েছে। হিমালয়ের পাদদেশে কপিলাবস্তুর শাক্যবংশের রাজা শুক্লোদন ও রাণী মায়াদেবীর পুত্ররূপে সিদ্ধার্থের জন্ম থেকে আরম্ভ করে তার বয়ঃপ্রাপ্তি এবং পরমা সুন্দরী কন্যা যশোধরার সাথে সিদ্ধার্থের বিবাহ, ভোগৈশ্বর্যের তথা সংসারের প্রতি তার অনাসক্তি, পুত্রের এই অনাসক্তি দূর করার জন্য শুক্লোদনের উদ্যান বিহার ও প্রমোদ ভ্রমণের ব্যবস্থা, রাজপথে পরিভ্রমণকালে জরাব্যাদিগ্রস্ত ও মৃতদেহ দেখে রাজপুত্রের কৌতূহলের বোধ, সৌম্যমূর্তি সংসারত্যাগী সন্নাসীকে দেখে অন্তরে বৈরাগ্যের সূচনা এবং গভীর রাতে নিদ্রাগ্রন্থ তরুণীদের অবস্থা দেখে বিতৃষ্ণায় সিদ্ধার্থের গৃহত্যাগের সিদ্ধান্ত গ্রহণ, রাজপুরীতে শোকের ছায়া, যশোধরার বিলাপ, সত্যান্বেষণের জন্য সিদ্ধার্থের দেশ পর্যটন, অবশেষে সাধনার দ্বারা সিদ্ধার্থের নির্বাণ ও বুদ্ধত্বলাভ প্রভৃতি ঘটনার বর্ণনায় গ্রন্থটি সমৃদ্ধ।

★ সৌন্দর্যনন্দ:-

अष्टितैः अनुमीयते यत् सौन्दर्यनन्दमहाकाव्यम् अश्वघोषस्य द्वितीया कृतिः। परन्तु अष्टायपकः कविः कवेः प्रथमरचनारूपेण इदं काव्यं स्वीकरोति। अष्टादशसर्गात्मके अस्मिन् कपिलावस्तुनगर्याः प्रतिष्ठया काव्यम् आरब्धम्। बुद्धस्य वैमात्रेयभ्रातुः नन्दस्य बौद्धधर्मग्रहणं बुद्धस्य निर्देशेन बौद्धधर्मस्य प्रचारः प्रसारश्च अस्य काव्यस्य मूलोपजीव्यः विषयः। तद्विहाय अपि बुद्धस्य संसारत्यागः, सत्यासग्रहणं, नन्दस्य विवाहः, सुन्दरी भार्या प्रति अनसक्तिः, सत्यासग्रहणं गृहत्यागः च इत्येतेषां विषयाणां वर्णना क्रियते अस्मिन् काव्ये।

कवेः अश्वघोषस्य सहजातप्रतिभायाः दार्शनिकप्रज्ञायाः च समन्वयः सौन्दर्यनन्दाख्ये काव्ये दृश्यते। इतिहासस्य धर्मचिन्तनायाः साहित्यगुणस्य च समावेशेन सः आसीत् स्वतन्त्रः। अतः ध्रुवजल्पनामाध्यमेन तस्य बौद्धधर्मोपदेशप्रदानं विशेषरूपेण स्वीकृतिः प्राप्ता। क्रोधलोभसंसारणां सांसारिकछणिनानन्दस्य प्रसारता अस्मिन् काव्ये प्रतिपादिता। बहुषु श्लोकेषु सौन्दर्यनन्दमहाकाव्ये यथा कामकलायाः उच्चस्वता वर्णिता, तथैव दार्शनिकतत्वानां सूक्ष्मातिसूक्ष्मं विश्लेषणमपि विद्यते। तस्मात् कविः स्वयमेव स्वकीये काव्ये तत्त्वं श्रावितवान् यत्—



“इत्येषा व्युपशान्तये न रतये मोक्षार्थगर्भा कृतिः  
 श्रोतॄणां ग्रहणार्थमन्यमनसां काव्योपचारात् कृता  
 यन्मोक्षात् कृतमन्यदत्र हि मया तत्काव्यधर्मात्  
 पातुं तिक्तमिवौषधं मधुयुतं हार्द्यं हि कथं स्यादिति ॥ (सौन्दरनन्द

१८/६३)

★ सौन्दरनन्द-

सौन्दरनन्द महाकाव्यটি অশ্বঘোষের দ্বিতীয় রচনা বলে পণ্ডিতরা অনুমান করেন। কিন্তু অধ্যাপক কীথ গ্রন্থটিকে কবির প্রথম রচনা বলে মনে করেন। ১৮টি সর্গে কপিলা বস্তু নগরীর প্রতিষ্ঠা দিয়ে কাব্যটি শুরু হয়েছে। বুদ্ধের বৈমাত্রেয় ভ্রাতা নন্দের বৌদ্ধধর্ম গ্রহণ ও বুদ্ধের নির্দেশে সেই ধর্মের প্রচার ও প্রসার এই কাব্যের মূল উপজীব্য বিষয়। এছাড়া বুদ্ধের সংসার ত্যাগ ও সন্ন্যাসগ্রহণ, নন্দের বিবাহ ও সুন্দরী স্ত্রীর প্রতি তার অনাসক্তি, সন্ন্যাস গ্রহণ ও গৃহত্যাগ প্রভৃতি ঘটনার রসসমৃদ্ধ কাব্যিক বর্ণনা রয়েছে এই কাব্যে।

কবি অশ্বঘোষের সহজাত প্রতিভা ও দার্শনিক প্রজ্ঞার একমাত্র বিরল সমন্বয় ঘটেছে সৌন্দরনন্দ নামক মহাকাব্যে। কবি অশ্বঘোষ তার কাব্যটিকে পাঠকদের কাছে চিত্তাকর্ষক করে তুলেছেন। ইতিহাস, ধর্মচেতনা ও সাহিত্যগুণের সমাবেশে তিনি ছিলেন সম্পূর্ণ স্বতন্ত্র। তাই ছোটো ছোটো গল্পের মাধ্যমে বৌদ্ধ উপদেশ প্রদানই তার রচনাগুলিতে বিশেষ রূপেই স্বীকৃতি পেয়েছে। ক্রোধ, লোভ, দম্ভের দোষ, সংসার ও সাংসারিক ক্ষণিক আনন্দের প্রসারতা কাব্যটিতে প্রতিপাদিত হয়েছে। বহু শ্লোকে ক্রিয়াপদের বাহুল্য দেখে অনেকে মনে করেন যে সংস্কৃত শিক্ষা দানের উদ্দেশ্যে কাব্যটি রচিত হয়েছে। সৌন্দরনন্দ মহাকাব্যে একদিকে যেমন বর্ণিত হয়েছে কামকলার উচ্ছলতা, তেমনি অপর দিকে রয়েছে নিগূঢ় দার্শনিকতত্ত্বের সূক্ষ্মাতিসূক্ষ্ম বিশ্লেষণ। তাই কবি হিসেবে অশ্বঘোষের কাব্যগুলিতে শিল্পগুণসার্থক ও কীর্তিবাহীর সহজাত দার্শনিক প্রতিভার সমন্বয় ঘটেছে তার সৌন্দরনন্দ মহাকাব্যে। তাই কবি স্বয়ং কাব্যেতে তত্ত্ব কথা গুনিয়েছেন-

“ইত্যেষা ব্যুপশান্তয়ে ন রতয়ে মোক্ষার্থগর্ভা কৃতিঃ

শ্রোতৃণাং গ্রহণার্থমন্যমনসাং কাব্যোপচারাৎ কৃতা

যন্মোক্ষাৎকৃতমন্যদত্র হি ময়া তৎকাব্যধর্মাৎ

পাতুং তিক্তমিবৌষধং মধুযুতং হার্দ্যং কথং স্যাদिति ॥” (সৌন্দরনন্দ

১৮/৬৩)

★ গণ্ডীস্তোত্রগাথা

অশ্বঘোষ: ऊनत्रिंशच्छ्लोकैः स्रग्धराच्छन्दसा गण्डीस्तोत्रगाथानामकं गीतिकाव्यमेकं प्रणीतवान्। पूर्वतनकाले बौद्धमठे गण्डीनामकमेकं वाद्ययन्त्रम् आसीत्। तेन वाद्ययन्त्रेण साकं काष्ठखण्डस्य संयोगे सति एकः सुमधुरः ध्वनिः उत्पन्नः भवति स्म, स ध्वनिः पवित्रः इति बौद्धाः मन्यन्ते। तस्य ध्वनेः हृदतेन आवेदनेन गण्डीनामकवाद्ययन्त्रस्य च प्रशंसया गण्डीस्तोत्रगाथानामकस्य गीतिकाव्यस्य श्लोकाः प्रणीताः भवन्ति स्म। अस्मिन् काव्ये स्वतोत्सारिताकृत्रिमावेगेन सह अपूर्वच्छन्दकौशलस्य विद्यमानत्वात् एतत् रचनारूपं गीतिकाव्यत्वेन उत्कृष्टं स्थानं भजते। यद्यपि Winternitz महोदयस्य



मतेन एतत् गीतिकाव्यम् अश्वघोषस्य समकालिकेन कुमारलाटेन प्रणीतं तथापि काव्यस्य स्वरूपं विषयं वैशिष्ट्यं च विचार्य प्रायः सर्वे गवेषकाः अश्वघोषस्य काव्यमिदमिति मन्यन्ते ।

★ गङ्गीस्तोत्रगाथा-

अश्वघोषेण स्रक्करा छन्दे रचितं उनत्रिंशति श्लोके निबन्ध एकमात्रं गीतिकाव्यं गङ्गीस्तोत्रगाथा । आगेकार दिने बौद्धमठे गङ्गी नामक एक विशेष वाद्ययन्त्र राखा थाकत । सेइ वाद्ययन्त्रे कार्ठखण्डेण द्वारा आघात करले एक सुमधुर ध्वनिं सृष्टि हतो, येतिके बौद्धगण खुब पवित्र बले मने करत । सेइ ध्वनिं मर्मगत आवेदन ओ गङ्गी नामक वाद्ययन्त्रेण प्रशंसा करेइ गङ्गीस्तोत्रगाथा गीतिकाव्येण श्लोक गुलि रचित हयेछिल । ऐइ काव्येण स्वतोत्सारित अकृत्रिम आवेगेण साथे अपूर्व छन्दकौशल मिलित हओयाय रचनाति गीति काव्यरूपे परिणत हयेछे । कवितागुलिं रचनाधर्मी अन्य दुति महाकाव्येण तुलनाय उक्कृष्टतर ओ आडम्बरपूर्ण । winternitz एर मते ऐइ गीतिकाव्यति अश्वघोषेण समसामयिक कुमारलाटेण रचना बले मने करा हले ओ काव्येण स्वरूप, विषयवस्तु ओ वैशिष्ट्य विचार करे अधिकांश गवेषकगण काव्यतिके अश्वघोषेण रचना बलेइ मने करेन ।

★ महायानश्रोद्धत्पादशास्त्रम् —

ग्रन्थस्य नाम्ना एव अनुमीयते यत् बौद्धमहायानसम्प्रदायस्य वक्तव्यविषयविज्ञानवादयोः ऐक्यप्रतिपादनाय एव रचितमिदं शास्त्रम् । वस्तुतस्तु महायानसम्प्रदायस्य दर्शनविशेषः अयं ग्रन्थः । तद्विहाय अपि अस्मिन् ग्रन्थे अश्वघोषस्य जीवनमपि उपलभ्यते इति मन्यते । जात्या यद्यपि अश्वघोषः ब्राह्मणः आसीत् तथापि सः आदौ सर्वास्तिवादिभिर्भिक्षुरूपेण दीक्षितोऽभूत् किञ्च परवर्तिनि काले महायानवादी सञ्जातः । महायानवादिनां प्रति श्रद्धाज्ञापनाय एव ग्रन्थोऽयं विरचितः । मूलग्रन्थः यद्यपि न आविष्कृतः तथापि सप्तमशतके अस्य चीनाभाषायाम् अनुवादः जातः । तदनन्तरं तस्य चीनाभाषातः आङ्ग्लभाषायाम् अनुवादः जातः ।

अन्तिमे उच्यते यत् अश्वघोषः कविः दार्शनिकः च आसीत् । तस्य रचनासमूहः कालिदासात् पूर्वयुगस्य काव्यप्रतिभायाः साक्षरवाहकाः । वृत्तान्तविन्यासेन रसपरिवेशनेन चरित्रचित्रनेन भाषामाधुर्येण छन्दसूषमया च तस्य रचना चित्ताकर्षिका सञ्जाता ।

★ महायानश्रोद्धत्पादशास्त्र-

ग्रन्थेण नामकरणं थेकेइ अनुमितं हय ये बौद्ध महायान सम्प्रदायेण मूल वक्तव्य ओ विज्ञानवादं ऐक्य प्रतिपादनेण उद्देश्ये ऐइ ग्रन्थति रचित हयेछे । वस्तुत ऐइ ग्रन्थति महायान सम्प्रदायेण दर्शन विशेष । एछाडा ग्रन्थति अश्वघोषेण जीवनी उपलब्धि हयेछे बलेओ मने करा हय । अश्वघोष जातिते ब्राह्मण हलेओ प्रथमे तिनि सर्वास्तिवादी भिक्षुरूपे दीक्षित हन, एवं परवर्तीकाले महायानवादी हन । फले महायानवादीदेण प्रति श्रद्धा ज्ञापनेण जन्य ऐइ ग्रन्थति रचित हय । मूलग्रन्थति आविष्कृत ना हलेओ सप्तम शतके चीना भाषाय ग्रन्थति प्रथम प्रकाशित हय । परवर्तीकाले ऐइ ग्रन्थति चीना भाषा थेके इंगरेजी भाषाय अनुवाद करा हय ।